मुझे जो कहना था

मैं तो बहुत कुछ कहना चाहती हूँ
इस समाज को बदलना चाहती हूँ
पर मैं हूँ कमजोर, पता नहीं कर सकी हूँ या नहीं।
मेरी चाहत है ये, मेरी इच्छा है ये।
समाज में जो भेदभाव है, मिटाना चाहती हूँ उसे
सबको एक साथ मिलाना चाहती हूँ,
मैं हर लड़कियों के लिए लड़ना चाहती हूँ, आवाज़ उठाना चाहती हूँ।
हर लड़की को पक्षियों की तरह उड़ना सिखाना चाहती हूँ मैं।
पर मैं कुछ नहीं कर सकी।
मैं कुछ नहीं कर पाई, मैं भी तो एक लड़की हूँ।

मैं आवाज़ उठाना चाहती हूँ, पूछना चाहती हूँ
क्यों है ये लड़का - लड़की भेदभाव?
क्यों लड़कियाँ ही घर की दीवारों की अंदर बंद है?
लड़के क्यों नहीं?
क्या लड़कियों को कोई हक नहीं?
क्या लड़कियाँ सिर्फ घर के काम करने के लिए है?

(**Note**: Graded Items may be published in **Schoolwki.** So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

मुझे पूछना है क्यों ?

क्यों लड़कियों को बहुत कुछ त्याग करना पड़ती है ?
क्यों वो जी भर के नहीं जीते ?
क्यों अपनी पढ़ाई को छोड़ते हैं ?
क्योंकि समाज उन्हें आगे बढ़ने नहीं देती ।
मैं एक बार फिर से पूछना चाहती हूँ क्यों ?
क्यूँ ? लड़कियों को उनके हक नहीं देती ।

समाज तो बदल रहा है ; पर पूरी तरह नहीं ।
लड़कियाँ चार दीवार की अंदर रहने के लिए नहीं हैं ।
वो परियाँ होती है, वो एक अच्छी बेटी या माँ होती है ।
वो सपनों को छोड़कर गृहणी बनती है
क्यों लड़कियों को त्याग करना है ?
हर लड़की, हर औरत , हर माँ अपनी खुशियों को छोड़ते हैं क्यों ?
हम क्यों नहीं पूछते ? क्यों ?
हर माँ अपने आपको भूल जाती है क्यों ?
सपनों को भूलते हैं क्यों ?
क्या उन्हें कोई इच्छा नहीं होती ?

(**Note**: Graded Items may be published in **Schoolwki.** So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

क्या हम बदल पाएँगे इस समाज को ?
क्या हम मिटा पाएँगे इस भेदभाव को ?
आवाज उठाना है हमें, तब साथ काम करना है
तभी तो मिलेंगी आजादी ।
मुझे पता है किसी न किसी दिन लड़कियों को आजादी तो मिलेंगी,
लड़कियाँ सपनों को पूरा करेंगी, पक्षियों की तरह आजाद होंगी ।
पर इन पाबंदियों को कौन तोड़ेंगे,
किसीको भी इतना हिम्मत नहीं की वो पाबंदियों को तोड़े, या आवाज उठाए
इन लड़कियों को डराके रखी है, उन्हें बांध के रखी है समाज ने ।

ये बदलना तो लड़कियों की ही जिम्मेवारी है,
मगर ये नहीं बदल पाई तो हम भी बनेंगे बेटी,
अपनी दादियों की तरह,
हम रहेंगे समाज के लिए सिर्फ एक खिलौना
आवाज उठाओ और तोड़ो इन पाबंदियों को
मैं भी हूँ एक लड़की,
ये है जो मैं कहना चाहती थी ।
पूछो समाज से क्यों ?
क्यों नहीं है लड़की आजाद ??